YUGBODH BOOKS

युगबोध

रंग बिरंगे गीत

अपनी बात

युगबोध रंग बिरंगे गीत में बच्चों को गुदगुदाने वाले छोटे-छोटे गीतों का संकलन किया गया है । बालमन जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है । बालक अपने आस-पास की वस्तुओं को जानने और समझने का प्रयास करता है । इन गीतों के माध्यम से उसे अनेक छोटी-छोटी वस्तुओं से परिचित कराने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि इन गीतों में लय हो और बच्चे इसे खेलते, खाते किसी भी समय गुनगुना सकें ।

माता-पिता भी इस बात के लिए चिन्तित रहते हैं कि उनके बच्चों का मानसिक और बौद्धिक विकास सहजतापूर्वक हो । वे चाहते हैं छात्र जीवन आरम्भ करने के पूर्व उनका बच्चा अपने आस-पास के परिवेश को जाने और समझे । इन गीतों का संचयन करते समय अभिभावकों की इस अभिलाषा का भी पूर्णतया ध्यान रखा गया है ।

इस पुस्तक में बालक की मनोभावनाओं के अनुकूल चित्र भी दिये गये हैं जिनके माध्यम से बालक अपने आस-पास के वातावरण से सम्बन्धित पशु-पक्षियों, फलों, खिलौनों आदि से परिचित हो सके ।

चार-पाँच वर्ष की आयु वाले बच्चों के योग्य गीतों का संग्रह इसमें किया गया है जिनकी भाषा अत्यन्त ही सरल है। इसमें प्रार्थना, संस्कार, पशु-पक्षी, प्रकृति आदि से संबंधित अनेक प्रकार के गीतों को संकलित किया गया है । इसमें परम्परात्मक गीतों के साथ श्रेष्ठ कवियों की रचनायें भी सम्मिलित की गई हैं ।

छोटी कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी । इन गीतों के माध्यम से वे बच्चों को अनेक ज्ञानवर्धक बातें सरलता से सिखा सकते हैं ।

हमें आशा ही नहीं अपितु विश्वास भी है कि शिक्षक वर्ग, अभिभावक एवं बालक इसे अपनाकर हमारे द्वारा प्रकाशित की गई इस पुस्तक की महत्ता को प्रतिपादित करेंगे ।

—प्रकाशक

आभार

इस पुस्तक में हमने, अनेक पारंपरिक गीतों का चयन किया है । साथ ही इसमें अनेक कवियों की श्रेष्ठ रचनाओं का भी समावेश है । उनके द्वारा दिये गए सहयोग के प्रति हम हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करते हैं । कुछ गीतकारों के नाम हमें उपलब्ध नहीं हो सके, यदि उपलब्ध हुए तो अगले संस्करण में हम उनका नाम निर्देश अवश्य करेंगे ।

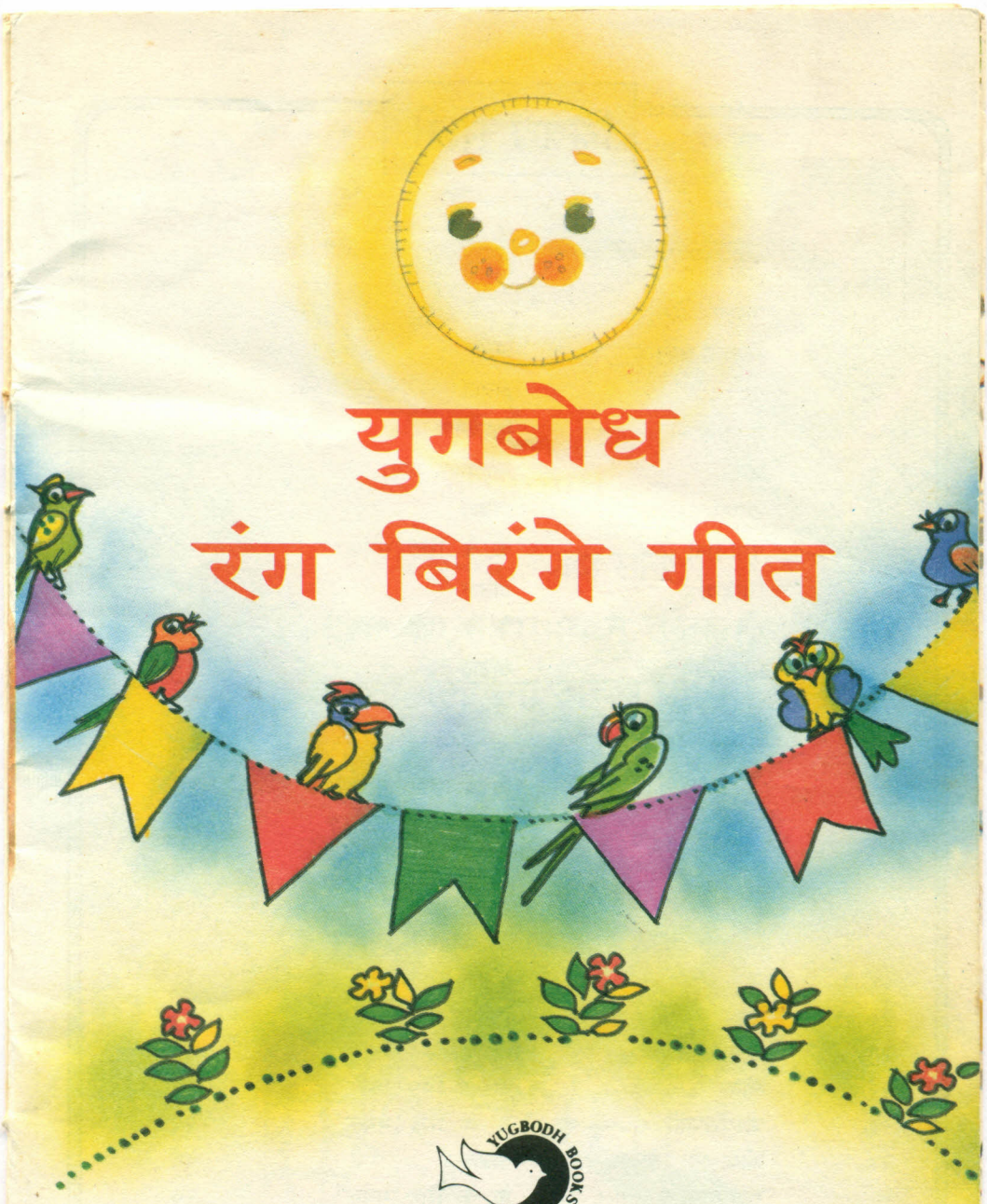

युगबोध
रंग बिरंगे गीत

युगबोध प्रकाशन
युगबोध हाउस
6, समता कालोनी
रायपुर (म०प्र०)- 492001

विषय सूची

क्रमांक	कविता	कवि	पृष्ठ संख्या
१.	होता नाम	गिरीश पंकज	३
२.	मछली	अज्ञात	४
३.	अक्कड़ बक्कड़	अज्ञात	५
४.	गुड्डु	अज्ञात	६
५.	घूमने जाओ	विश्वनाथ जोशी	७
६.	जाड़ा	विश्वनाथ जोशी	८
७.	टमाटर	अज्ञात	९
८.	पूसी रानी	के. के. सिंह 'मयंक'	१०
९.	चिड़िया	अज्ञात	११
१०.	मुर्गे की बाँग	के. के. सिंह 'मयंक'	१२
११.	मिट्ठू राम	अज्ञात	१३
१२.	अच्छे बच्चे	अज्ञात	१४
१३.	म्याऊँ-म्याऊँ	के. के. सिंह 'मयंक'	१५
१४.	कौवा और कोयल	के. के. सिंह 'मयंक'	१६
१५.	चंदा मामा	अज्ञात	१७
१६.	लालाजी	अज्ञात	१८
१७.	डॉक्टर	अज्ञात	१९
१८.	चिड़िया	केदार नाथ 'कोमल'	२०
१९.	मुन्ना	अज्ञात	२१
२०.	रेल	गिरिजा रानी अस्थाना	२२
२१.	बंदर की शादी	के. के. सिंह 'मयंक'	२३
२२.	लोमड़ काका	के. के. सिंह 'मयंक'	२४
२३.	वीर सिपाही	के. के. सिंह 'मयंक'	२५
२४.	कौवा और लोमड़ी	अज्ञात	२६
२५.	चंदा मामा से सवाल	के. के. सिंह 'मयंक'	२७
२६.	चुहिया	के. के. सिंह 'मयंक'	२८
२७.	गोल गोल पानी	अज्ञात	२९
२८.	नेहरू चाचा	विश्वनाथ जोशी	३०
२९.	चुहिया का जन्मदिन	विश्वनाथ जोशी	३१
३०.	नन्हा चूहा	अज्ञात	३२

८

पूसी रानी

पूसी रानी, पूसी रानी,
हरदम करती है मनमानी।
दूध चुराकर पी जाती है,
वैसे है शेरों की नानी।

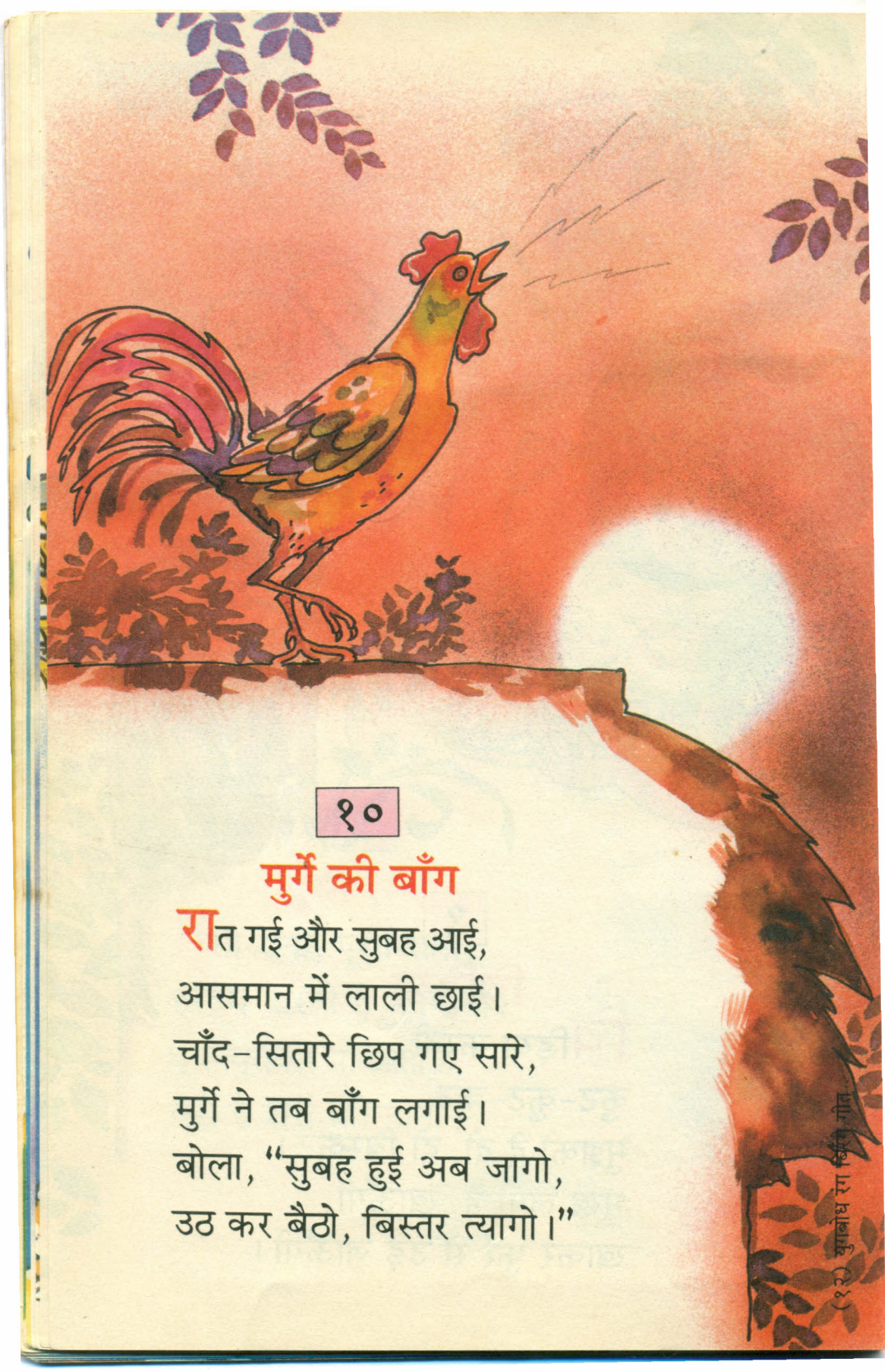

१०

मुर्गे की बाँग

रात गई और सुबह आई,
आसमान में लाली छाई।
चाँद-सितारे छिप गए सारे,
मुर्गे ने तब बाँग लगाई।
बोला, "सुबह हुई अब जागो,
उठ कर बैठो, बिस्तर त्यागो।"

१३

म्याऊँ- म्याऊँ

बिल्ली बोली, "म्याऊँ-म्याऊँ,
बोलो किस चूहे को खाऊँ,"
बिल्ला बोला, "लालच त्यागो,
कुत्ता आया जल्दी भागो,"
जान बची और लाखों पाए,
बिल्ला-बिल्ली घर को आए।

१४

कौवा और कोयल

कौवा काला, कोयल काली,
पर दोनों की बात निराली।
काँव-काँव कर कौवा हमको,
देखो खूब डराता है,
मीठा बोल मगर कोयल का,
सबका मन हर्षाता है।

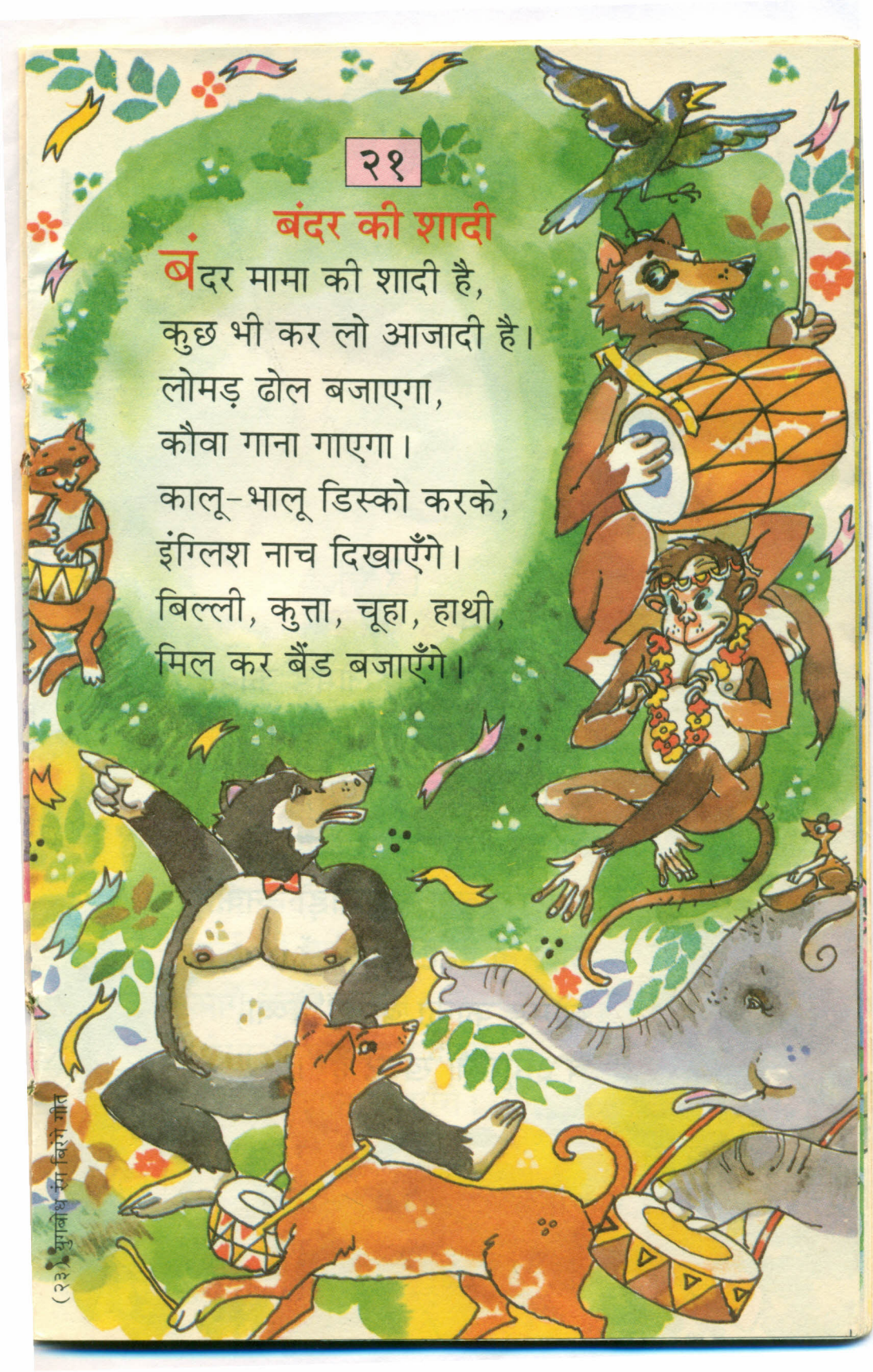

२१

बंदर की शादी

बंदर मामा की शादी है,
कुछ भी कर लो आजादी है।
लोमड़ ढोल बजाएगा,
कौवा गाना गाएगा।
कालू-भालू डिस्को करके,
इंग्लिश नाच दिखाएँगे।
बिल्ली, कुत्ता, चूहा, हाथी,
मिल कर बैंड बजाएँगे।

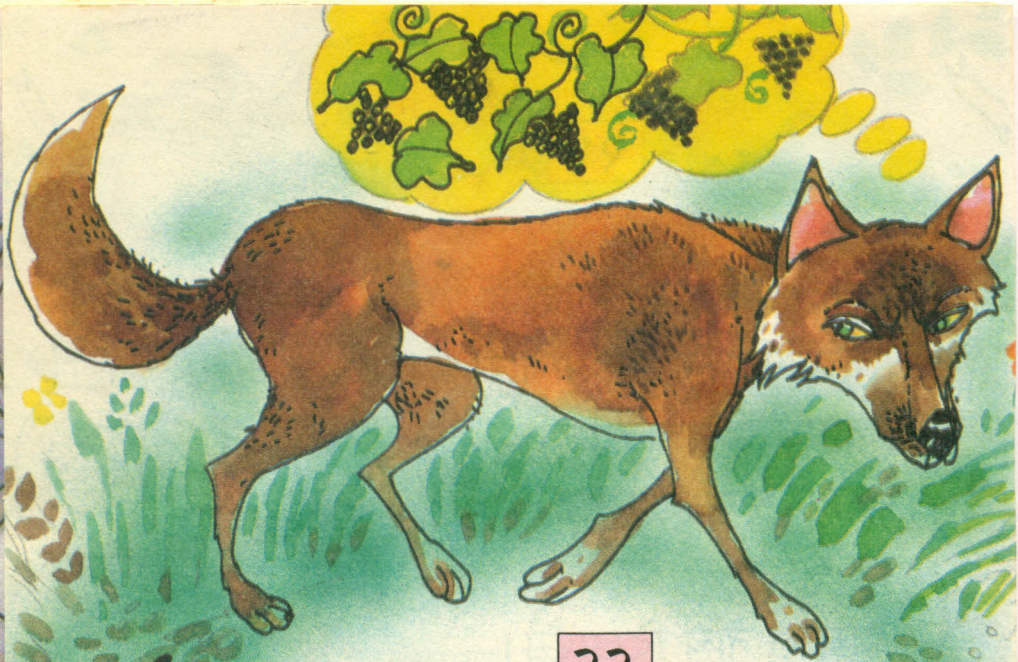

२२

लोमड़ काका

लोमड़ काका, लोमड़ काका,
कहाँ चले तुम इतनी दूर।
ढूँढ़ोगे तो मिल जाएँगे,
आस-पास तुमको अंगूर।
उछल-उछल कर तोड़ो उनको,
आप तो हट्टे-कट्टे हैं।
लोमड़ काका बोले "भैय्या,
वे अंगूर तो खट्टे हैं"।

२३

वीर सिपाही

हम भारत के वीर सिपाही,
आगे कदम बढ़ाएँगे।
कोई भी कठिनाई आए,
आगे बढ़ते जाएँगे।
सीमाओं पर पहरा देकर,
देश की शान बढ़ाएँगे।
झंडा ऊँचा रहे हमारा
गीत सदा ये गाएँगे।

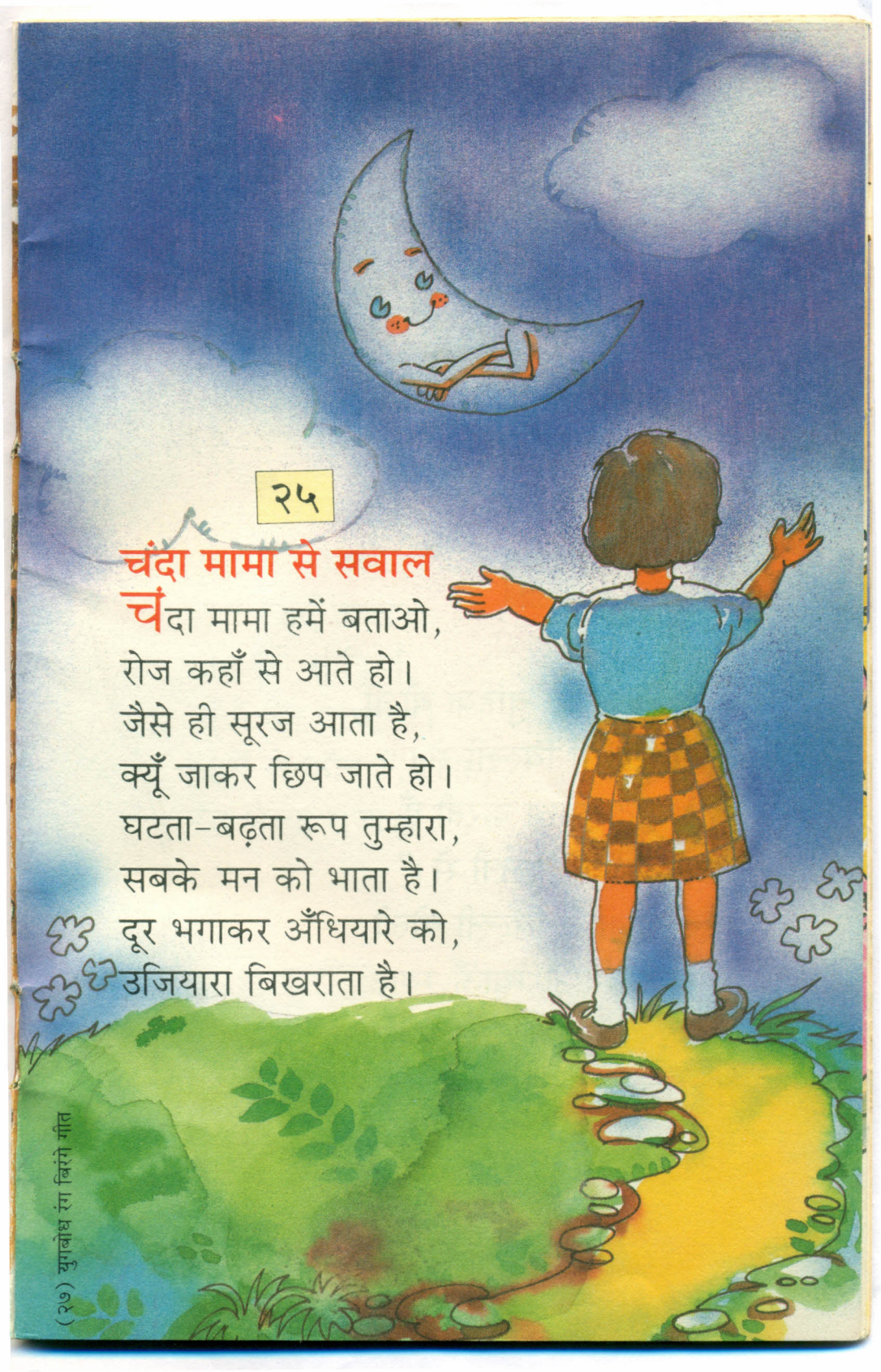

२५

चंदा मामा से सवाल

चंदा मामा हमें बताओ,
रोज कहाँ से आते हो।
जैसे ही सूरज आता है,
क्यूँ जाकर छिप जाते हो।
घटता-बढ़ता रूप तुम्हारा,
सबके मन को भाता है।
दूर भगाकर अँधियारे को,
उजियारा बिखराता है।

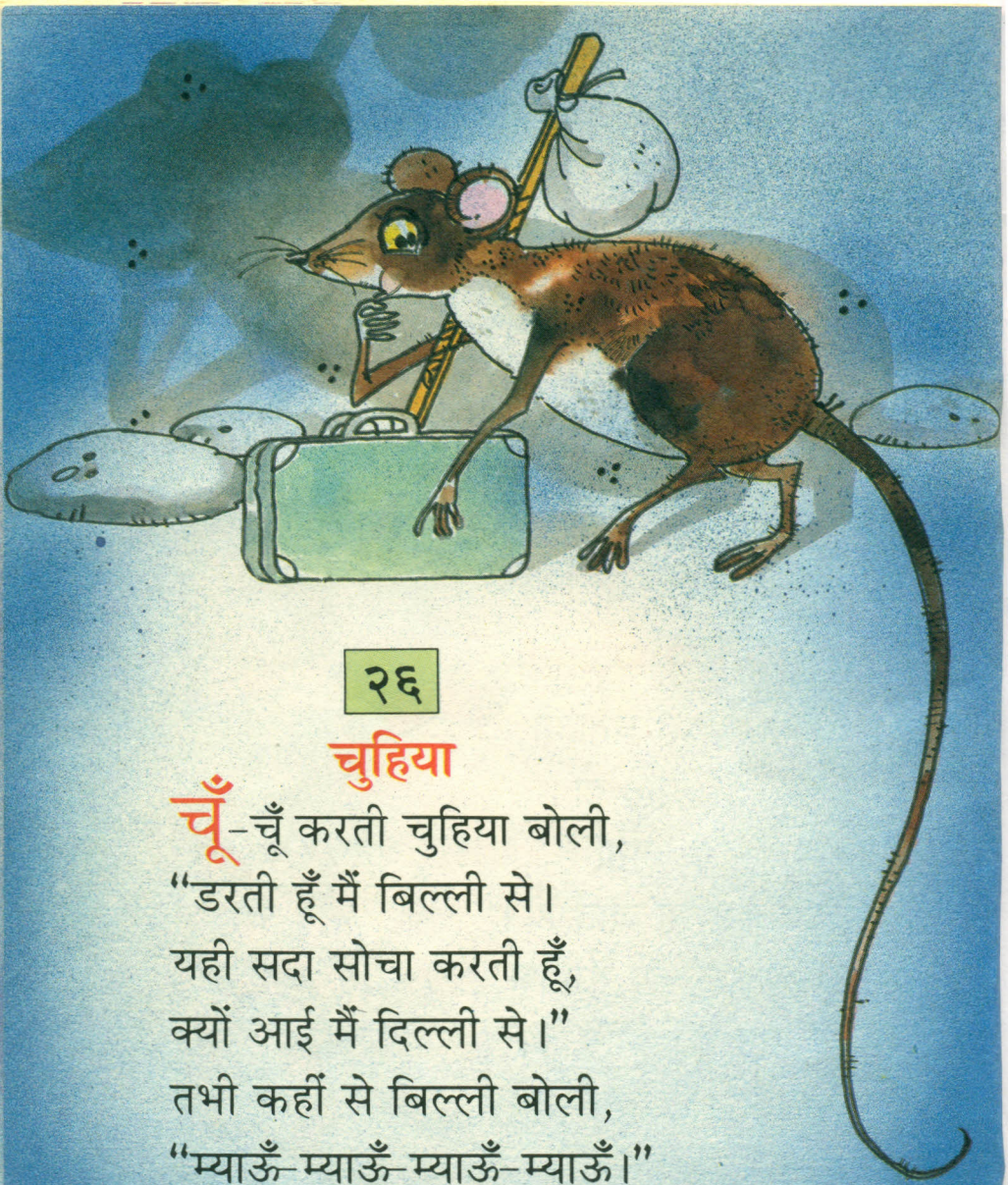

२६

चुहिया

चूँ-चूँ करती चुहिया बोली,
"डरती हूँ मैं बिल्ली से।
यही सदा सोचा करती हूँ,
क्यों आई मैं दिल्ली से।"
तभी कहीं से बिल्ली बोली,
"म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ।"
चुहिया बोली, "बिल बतलाओ,
जिसमें जाकर मैं छुप जाऊँ।"